

नियमित एवं दूरस्थ शिक्षण विधि से प्राप्त बी.एड.
प्रशिक्षण/अध्ययन केन्द्रों में पर्याप्त शिक्षक संख्या उपलब्धता संबंधी
समस्याओं का अध्ययन:

डॉ. अनिता सिंह
सहायक प्राध्यापक (शिक्षा)
पं. सुन्दरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय
छत्तीसगढ़ बिलासपुर
Email- 31anitasingh@gmail.com

शोध सारांश

Key words - अधुनातन, क्षमता-उन्नयन, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद

शिक्षा की महत्ता को सार्थक बनाने के लिए समर्पित व सुप्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता होती है। किसी भी शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित है कि किसी समाज की सांस्कृतिक, सामाजिक दृष्टिकोण का पता, उसके शिक्षकों से लगता है। शिक्षक की गुणवत्ता, हर शिक्षा की गुणवत्ता निर्धारित करती है। शिक्षकों की गुणवत्ता उनके विशिष्ट प्रशिक्षण पर निर्भर करती है। राधाकृष्णन आयोग (1948-49) के अनुसार भी संपूर्ण शिक्षा प्रणाली एवं संस्कृति की धुरी अध्यापक होता है। वर्तमान समय में शिक्षकों के बी. एड. प्रशिक्षण की दो विधायें प्रचलित हैं :- नियमित शिक्षा जिसमें कक्षा में आमने-सामने विधि से बी. एड. प्रशिक्षण दिया जाता है तथा दूसरी दूरस्थ शिक्षा (Distance Education) जिसमें शिक्षक तथा शिक्षु को स्थान-विशेष अथवा समय-विशेष पर मौजूद होने की आवश्यकता नहीं होती। यह प्रणाली, सतत शिक्षा, सेवारत कार्मिकों के क्षमता-उन्नयन तथा शैक्षिक रूप से वंचित क्षेत्रों में रहने वाले शिक्षुओं के लिए गुणावत्तामूलक व तर्कसंगत शिक्षा के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

प्रस्तुत अध्ययन में बी.एड. प्रशिक्षाथियों की प्रशिक्षण संबंधी समस्याओं का अध्ययन किया गया है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE) नयी दिल्ली के मानदण्ड एवं मानक अधिनियम, 2014 द्वारा बी. एड. प्रशिक्षण में समय-समय पर किये गए संशोधनों ने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पर इस तरह के अनुसंधान करने को प्रोत्साहित किया है।

प्रस्तावना—

अध्यापक अपने शिक्षकीय व्यवसाय में अपने कर्तव्यों के प्रति तभी न्याय कर सकता है जब वह सुयोग्य, समर्पित व्यवसाय से संतुष्ट और अधुनातन नवाचारों से भिन्न हो तथा उसे अपनाने के लिए उत्सुक हो। वह अपनी क्षमता—निर्माण के लिए उत्तम प्रकार का प्रशिक्षण प्राप्त हो। वर्तमान समय में शिक्षकों के बी. एड. प्रशिक्षण की दो विधायें प्रचलित हैं :- नियमित शिक्षा जिसमें कक्षा में आने—सामने विधि से बी. एड. प्रशिक्षण दिया जाता है तथा दूसरी दूरस्थ शिक्षा (Distance Education) जिसमें शिक्षक तथा शिक्षु को स्थान—विशेष अथवा समय—विशेष पर मौजूद होने की आवश्यकता नहीं होती। भारतीय सरकार ने सर्व शिक्षा अभियान, मध्याह्न भोजन व्यवस्था, राष्ट्रीय करीकुलम फ्रेमवर्क फॉर टीचर एजुकेशन जैसे अनेकों लोकप्रिय कार्यक्रम संचालित कर शालाओं में दर्ज संख्या बढ़ाने, दूरदेहाती क्षेत्रों की बिखरी बस्तियों के निरक्षर लोगों को शिक्षित करने के प्रयास स्वरूप मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था को अपनाकर इसे अधिक लोकप्रिय बना दिया है।

वास्तव में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का प्रमुख आकर्षक यह है कि इसके माध्यम से सीमान्त वर्ग, घुमन्तु वर्ग, विकलांग वर्ग, वंचित वर्ग, आयु बंधनों से मुक्त, निर्धन व इच्छुक लोग कम लागत में अपनी शिक्षा जारी रख सकते हैं। भारत जैसे विविधता से परिपूर्ण देश में ऐसे वर्ग के लोगों की संख्या बहुत अधिक है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण का ध्येय वाक्य है—“कार्य करते हुए सीखें” (**Learn while you work**), “शिक्षा आपके द्वार पर” (**Eduction at your doorstep**), पहुंच से परे लोगों तक पहुंचना (**Reaching the unreached**) इसके माध्यम से ऐसे लोग जो यूनिवर्सिटी शिक्षा के बीच में छोड़कर पुनः अपनी पढ़ाई जारी रखना चाहते हैं, अथवा वे लोग जो अपनी यूनीवर्सिटी शिक्षा पूर्ण होने के पूर्व ही पढ़ाई छोड़ देते हैं वे पुनः अपनी शिक्षा जारी रख सकते हैं। यह प्रणाली सीखने वाले के लिए विद्यार्थी—केंद्रित बनाकर उन्हें स्वःस्फूर्त प्रयास, स्वाध्याय एवं स्वयं की गति से सीखने का अवसर प्रदान करती है। इससे मिलने वाला फीडबैक, जांच परीक्षा तथा सत्रांत परीक्षा सभी से उन्हें सफलतापूर्वक बी. एड. एवं अन्य व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को पूरा करने में सहायता मिलती है।

अध्ययन का औचित्य—

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा आज सर्वसुलभ व लोकप्रिय होने के साथ ही बहुआयामो हो गयी है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (NCTE) नयी दिल्ली के मानदण्ड एवं मानक अधिनियम, 2014 द्वारा बी. एड. प्रशिक्षण में समय—समय पर किये गए संशोधनों ने इसमें अनुसंधान करने को प्रोत्साहित

किया है। यह एक उत्साहपूर्ण पहल है। 2000 से 2016 की अवधि में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पर कई अनुसंधान एवं निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं। 29 एवं 27 मई 2011 में तमिलनाडु में आयोजित अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन एवं सन् 2012 में DEC की पहल पर उ. प्र. राजर्षि टण्डन (मुक्त) विश्वविद्यालय, इलाहाबाद में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में अनेको शोध-पत्र पढ़े गए हैं। और अनुभवी विद्वानों के विचार प्राप्त हुए हैं, इनके निष्कर्ष एवं सुझावों की विवेचना करने पर उनमें विभिन्न प्रकार के विरोधाभासी निष्कर्ष, रिक्तता और अपर्याप्तता, उजागर हुए हैं और उनके कारण दूरस्थ शिक्षा एवं नियमित शिक्षा का अध्ययन, आज शैक्षिक शोध का बहुचर्चित विषय हो गया है। यहां प्रोफेसर कौल (2006) का सुझाव विचारणीय है —In the book entitled “Four Decades of Distance Education in India (Reflection of policy and Practice) page 463,” Koul (2006) mentioning Research on India Distance Education has suggested that some higher education Assemblies of India may undertake the responsibility of commission and assisting research projects jointly so that two system- formal/conventional and the distance/open-could come together to help the student in the open system to enjoy the benefits of the more flexible system together with the credibility which the conventional system together regards he has suggested comparative studies between conventional system as well as open distance education as a priority area of research.

इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर यहां विषय से जुड़े कतिपय प्रासंगिक शोधकार्यों के निष्कर्ष, विचारों, सुझावों का उल्लेख किया गया है, और उनकी विस्तार से विवेचना कर अध्ययन की आवश्यकता एवं औचित्य पर प्रकाश डाला गया है।

अध्ययन का उद्देश्य (Objectives of the Study)

प्रस्तावित अध्ययन के निम्नांकित उद्देश्य हैं—

1. छत्तीसगढ़ राज्य में प्रशिक्षणरत नियमित एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के बी. एड. प्रशिक्षार्थियों की प्रशिक्षण संबंधी समस्याओं का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना (Hypotheses Framed for the Study)

उपरोक्त अध्ययन के उद्देश्यों के परीक्षण हेतु निम्नांकित शोध परिकल्पना का निर्धारण किया गया है

—

H: नियमित एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली—दोनों माध्यमों से बी.एड. प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले विद्यार्थी प्रशिक्षण के विभिन्न आयामों में बाधाओं, चुनौतियों एवं समस्याओं का सामना करते हैं, उनकी प्रमुख समस्याएँ विद्यार्थी स्तर पर, फेकल्टी स्तर पर, संगठनात्मक स्तर, प्रशिक्षण, कक्षा—शिक्षा एवं सम्पर्क कार्यक्रम स्तर एवं कई अन्य स्तरों पर होती है।

इस संबंध में निम्नानुसार प्रमुख शोध प्रश्नों के माध्यम से समस्याओं की जानकारी तथा उनके उपचार के उपाय ढूँढने का प्रयास प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से किया गया है—

शोध प्रश्न— क्या आपके प्रशिक्षण/अध्ययन केन्द्र में पर्याप्त संख्या शिक्षक उपलब्ध होते हैं?

उपरोक्त शोध प्रश्न के विश्लेषण हेतु निम्नानुसार प्रश्न की रचना कर आंकड़ों का संग्रहण किया गया —.

प्रश्न क्र. 1 : क्या आपकी संस्था में द्विवर्षीय बी.एड. प्रशिक्षण के लिए निम्नानुसार योग्य शिक्षक—प्रशिक्षक है?

प्रयुक्त पदों की क्रियात्मक परिभाषा (Operational Definitions of Terms Used)

- नियमित शिक्षण के बी.एड. प्रशिक्षार्थी का अभिप्राय उन बी.एड. प्रशिक्षार्थियों से है जो छत्तीसगढ़ राज्य के शासकीय/अशासकीय शिक्षा महाविद्यालयों में नियमित कक्षा शिक्षण विधि (Face to Face) में बी.एड. प्रथम एवं द्वितीय वर्ष का प्रशिक्षण ले रहे हैं। ये प्रशिक्षार्थी राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (मानदण्ड तथा मानक) अधिनियम, 2014 के प्रावधानों के अधीन बी.एड. प्रशिक्षण ले रहे हैं।
- दूरस्थ शिक्षा के बी.एड. प्रशिक्षार्थियों से तात्पर्य उन बी.एड. प्रशिक्षार्थियों से है जो पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़ बिलासपुर के 10 अध्ययन केन्द्रों से जुड़े रहकर बी.एड. प्रथम एवं द्वितीय वर्ष का प्रशिक्षण ले रहे हैं। इनका प्रशिक्षण भी एन.सी.टी.ई. अधिनियम, 2014 के प्रावधानानुसार हो रहा है।

❖ संबधित शोध साहित्य की समीक्षा

रामानुजम (2002) ने अपनी पुस्तक (Distance open Learning-challenges to Developing Countries) में कई समस्याओं का उल्लेख किया है। उन्होंने Hawkrige (1995) के विचार का उल्लेख किया है :- “The fact is that using the new technology for teaching is not a matter of any interest to a considerable majority among present Open University Academic staff who prefers to stick to their reading and writing... thus he has indicated the problem of Technology – Pedagogy Conflicts.

रामानुजम ने अन्य समस्याओं तथा तकनीकी रूप से अपर्याप्त प्रशिक्षण मुक्त मानव संसाधन का अभाव, लक्ष्यहीन, आडिर्यो-विडिर्यो कार्यक्रमों को तैयार करने योग्य प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव, उचित प्रशिक्षण की व्यवस्था न होना, गुणवत्तायुक्त मेकोनिजम का अभाव जैसी समस्याओं का भी उल्लेख किया है।

- डॉ. भट्नागर के अनुसार समस्या यह है कि “Student Response sheet” को अधिक उपयोगी कैसे बनाया जाय? अधिगमकर्ताओं के अधिगम सार्थक हो, उसके लिए दूरस्थ शिक्षण संस्थाओं में नियमित एवं सुयोग्य, अनुभवी फेकल्टी होनी चाहिए जिसका वर्तमान में नितान्त अभाव है। यह समस्या त्वरित हल चाहती है।

अध्ययन की शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन की शोध प्रविधि के रूप में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया है।

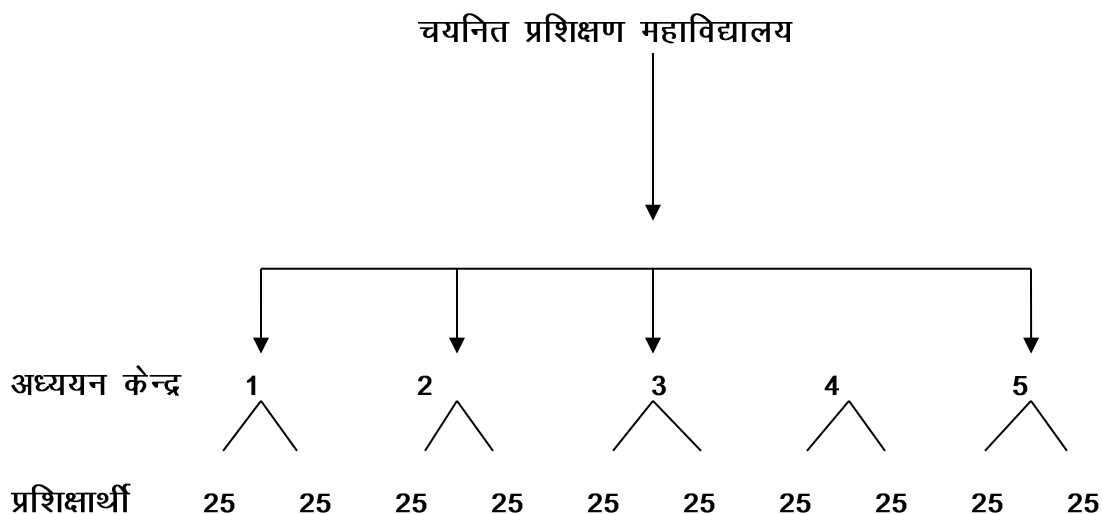
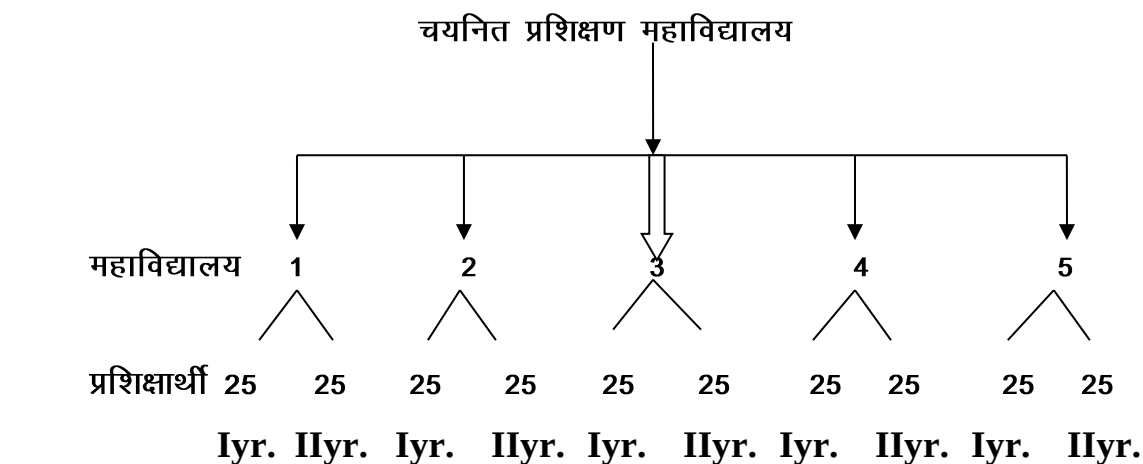
जनसंख्या (Papulation)

प्रस्तुत अध्ययन में दोनों शिक्षा प्रणालियों के बी.एड. प्रशिक्षार्थियों की प्रशिक्षण संबंधी समस्याओं का अध्ययन किया गया है, उसके लिये जनसंख्या सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ राज्य में एकमात्र मुक्त

विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत 10 अध्ययन केन्द्रों के बी.एड. प्रशिक्षार्थी एवं नियमित पारम्परिक ढंग से प्रशिक्षणरत शासकीय/अशासकीय प्रशिक्षार्थी होंगे।

न्यादर्श (Sample)

वर्तमान में छत्तीसगढ़ राज्य में कुल लगभग 138 स्ववित्तपाषी शिक्षा महाविद्यालयों तथा दो शासकीय, शिक्षा महाविद्यालयों में परम्परागत नियमित बी.एड. प्रशिक्षण संचालित हो रहा है। इनमें से नियमित से कुल पांच शिक्षा महाविद्यालयों का चयन किया गया और इन पांच महाविद्यालयों से यादृच्छिक विधि से बी.एड. प्रथम वर्ष के 25 तथा द्वितीय वर्ष के 25 प्रशिक्षार्थियों का चयन किया गया है। इसी प्रकार दूरस्थ शिक्षा के दस केन्द्रों में से पांच अध्ययन केन्द्रों का चयन कर यादृच्छिक रीति से प्रत्येक के प्रथम वर्ष के 25 तथा द्वितीय वर्ष के 25 प्रशिक्षार्थियों का चयन किया गया है। चयनित न्यादर्श का स्वरूप निम्नानुसार चार्ट में दिया गया है –



Iyr. Iyr. Iyr. Iyr. Iyr. Iyr. Iyr. Iyr. Iyr.

इस प्रकार न्यादर्श में कुल 250 प्रशिक्षार्थी सम्मिलित हुए हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में कुल 500 प्रशिक्षार्थियों का न्यादर्श में शामिल किया गया है।

चरांक (Variable)

अध्ययन में सम्मिलित चरांक निम्नानुसार हैं—

01. स्वतंत्र चर (Independent Variable)- प्रशिक्षण का प्रकार

02.साहचर्यित स्वतंत्र चर (Associated Independent Variable)—

(1) लिंग – पुरुष

(2) प्रशिक्षण वर्ष – प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष

03. आश्रित चर (Dependent Variable)—1. प्रशिक्षणार्थियों की प्रशिक्षण संबंधी समस्याएं

प्रयुक्त उपकरण (Tools Used)

इस अध्ययन में कुल 500 बी.एड. प्रशिक्षार्थियों का न्यादर्श (प्रथम वर्ष के 250 एवं द्वितीय वर्ष के 250) सम्मिलित है। अध्ययन हेतु अनुसंधानकर्ता द्वारा प्रश्नावली का निर्माण किया गया। प्रशिक्षण की समस्याओं से संबंधित प्रश्नों को विषय वस्तु विश्लेषण (content analysis) के द्वारा अलग अलग विषय विशेषज्ञों के द्वारा चयनित किया गया। तत्पश्चात् इन प्रश्नों को कारक विश्लेषण (factor analysis) के द्वारा factor loading ज्ञात किया गया। factor analysis में कुल 35 item के 14 factor प्राप्त हुए। **factor analysis** से इस प्रश्नावली मापनी में **62.266% cumulative loading** प्राप्त हुई। इस मापनी की विश्वसनीयता अर्थात् कानबेक अल्फा रिलायबिलिटी **70.6 %** प्राप्त हुई। प्रश्नावली में 21 वीं सदी की दृष्टि से दूरस्थ शिक्षा में सम्भावित सभी प्रकार की चुनौतियां तथा कॉलेजों एवं विश्वविद्यालय स्तर, अध्यापक स्तर, अभिभावक स्तर, अधिगम-कर्ता स्तर पर अनुभूत चुनौतियां, निर्देशन स्तर की चुनौतियां, प्रबन्ध स्तर की चुनौतियां, मूल्यांकन स्तर की चुनौतियां, टेक्नालॉजी स्तर की चुनौतियां, सामाजिक तथा अन्य स्तरों की चुनौतियों पर प्रश्न पूछे गये हैं। मुख्यतः प्रश्नों का क्षेत्र तीन स्तरों—संस्थागत स्तर (Institutional Level)] भाषा घटक, (Language Factor) एवं सामाजिक आर्थिक स्तर (Socio-Economic Level) तक सीमित रखे गये हैं।

प्रशिक्षण के प्रति समस्याओं से संबंधी परिकल्पनाओं का विश्लेषण :

शोध प्रश्न 1. क्या आपके प्रशिक्षण/अध्ययन केन्द्र में पर्याप्त संख्या शिक्षक उपलब्ध होते हैं?

उपरोक्त शोध प्रश्न के विश्लेषण हेतु निम्नानुसार प्रश्न की रचना कर आंकड़ों का संग्रहण किया गया .

प्रश्न क्र. 1 : क्या आपकी संस्था में द्विवर्षीय बी.एड. प्रशिक्षण के लिए निम्नानुसार योग्य शिक्षक—प्रशिक्षक है?

उपरोक्त शोध प्रश्न के विश्लेषण हेतु निम्नानुसार प्रश्नों की रचनाकर आंकड़ों का संग्रहण किया गया

—

सारणी

बी.एड. प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षार्थियों का अभिमत

	बी.एड. प्रथम वर्ष				बी.एड. द्वितीय वर्ष			
	नियमित		दूरस्थ		नियमित		दूरस्थ	
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं
प्राचार्य	78.4 %	21.6 %	87.2 %	12.80 %	96.8 %	3.20 %	98.4 %	1.60 %
शिक्षा के परिप्रेक्ष्य	72.8 %	27.2 %	80.8 %	19.2 %	95.20 %	4.80 %	91.2 %	8.80 %
अध्यापन शास्त्र	76.00 %	24.00 %	74.4 %	25.6 %	73.6 %	26.4 %	80.00 %	20 %
कला शिक्षक	76.00 %	24.00 %	81.6 %	18.4 %	94.4 %	5.6 %	89.6 %	10.40 %
व्यायाम शिक्षक	76 %	24.00 %	64.8 %	35.2 %	76.00 %	24.00 %	84.8 %	15.20 %
संगीत शिक्षक	65.6 %	34.4 %	54.4 %	45.6 %	77.6 %	22.4 %	76 %	24 %

निष्कर्ष —

उपरोक्त सारणी का विश्लेषण करने से स्पष्ट है कि द्विवर्षीय बी.एड. प्रशिक्षण हेतु योग्य शिक्षक प्रशिक्षकों की उपलब्धता के संदर्भ में बी.एड. प्रथम वर्ष के नियमित व दूरस्थ शिक्षा के क्रमशः 78.4 % एवं 87.2 % प्रशिक्षार्थियों ने संस्था में प्राचार्य होने हेतु सहमति दी है, जबकि 21.6 % और 12.8 % ने संस्था में प्राचार्य नहीं है बताया है। द्वितीय वर्ष के नियमित व दूरस्थ शिक्षा के 96.8 % और 98.4 % ने संस्था में प्राचार्य है, बताया है जबकि 3.2 % और 1.6 % ने संस्था में प्राचार्य नहीं है बताया है।

शिक्षा के परिप्रेक्ष्य विषय के शिक्षक के संदर्भ में प्रथम वर्ष के नियमित व दूरस्थ शिक्षा के क्रमशः 72.8% एवं 80.8 % प्रशिक्षार्थियों ने सहमति दी है जबकि 27.2 % एवं 19.2 % ने शिक्षक नहीं है, बताया है द्वितीय वर्ष के 95.2 % एवं 91.2 % प्रशिक्षार्थियों ने शिक्षा के परिप्रेक्ष्य विषय संबंधित प्राध्यापक है बताया है, जबकि 4.8 % एवं 8.8 % ने नहीं है बताया।

अध्यापन शास्त्र के शिक्षक संस्था में कार्यरत है के संदर्भ में प्रथम वर्ष के नियमित व दूरस्थ शिक्षा के 76.00 % एवं 74.4 % प्रशिक्षार्थियों ने हाँ कहा है जबकि 24 % एवं 25.6 % ने नहीं है बताया है, द्वितीय वर्ष में नियमित व दूरस्थ शिक्षा के 73.6 % एवं 80 % प्रशिक्षार्थियों ने हाँ कहा है जबकि 26.4 % व 20 % ने नहीं है बताया है।

कला शिक्षक की संस्था में उपलब्धता के संदर्भ में क्रमशः 76 % व 81.6 % नियमित व दूरस्थ शिक्षा के प्रशिक्षार्थियों ने अपनी सहमति दी है जबकि 24 % एवं 18.4 % ने असहमति जताई है, द्वितीय वर्ष के 94.4 % व 89.6 % ने सहमति दी है तथा 56 % एवं 10.4 % ने असहमति दी है।

व्यायाम शिक्षक संस्था में कार्यरत है कि परिप्रेक्ष्य में 76 % व 64.8 % नियमित व दूरस्थ शिक्षा के प्रशिक्षार्थियों ने अपनी सहमति दी है जबकि 24 % एवं 35.2 % ने अपनी असहमति दी है। द्वितीय वर्ष के 76 % एवं 84.8 % प्रशिक्षार्थियों ने सहमति दी है तथापि 24 % एवं 15.20 % ने असहमति दी है।

संगीत शिक्षा के क्रमशः 65.6 % और 54.4 % ने सहमति दी है, तथा 34.4 % एवं 45.6 % ने असहमति दी है द्वितीय वर्ष के नियमित व दूरस्थ शिक्षा के 77.6 % व 76 % ने सहमति दी है, तथापि 22.4 % व 24 % ने असहमति दी है।

विवेचना –

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद के मानक अनुसार कथन में सम्मिलित समस्त विषयों के शिक्षक, प्रशिक्षको की नियुक्ति संस्था में अनिवार्य है, उपयुक्त कथन से प्राप्त आंकड़ा इसकी पुष्टि करता है कि संस्था में सभी विषयों के प्रशिक्षक है।

बी.एड. प्रशिक्षार्थियों की समस्याओं से संबंधित निष्कर्ष – बी.एड. प्रशिक्षार्थियों की समस्याओं से संबंधित शोध प्रश्न बनाए गए जिसके अन्तर्गत 01 प्रश्न शामिल है जिनके निष्कर्ष निम्नानुसार है—

1. द्विवर्षीय बी.एड. प्रशिक्षण हेतु योग्य शिक्षक प्रशिक्षको की उपलब्धता के संदर्भ में बी.एड. प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष के नियमित व दूरस्थ शिक्षा के प्रशिक्षार्थियों ने संस्था में प्राचार्य होने हेतु सहमति दी है,
2. शिक्षा के परिप्रेक्ष्य विषय के शिक्षक के संदर्भ में प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष के नियमित व दूरस्थ शिक्षा के प्रशिक्षार्थियों ने शिक्षा के परिप्रेक्ष्य विषय संबंधित पर्याप्त प्राध्यापक है बताया है।
3. अध्यापन शास्त्र के पर्याप्त शिक्षक संस्था में कार्यरत है के संदर्भ में प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष के नियमित व दूरस्थ शिक्षा के प्रशिक्षार्थियों ने सहमति दी है
4. कला शिक्षक की संस्था में उपलब्धता के संदर्भ में प्रशिक्षार्थियों ने अपनी सहमति दी है
5. व्यायाम शिक्षक संस्था में कार्यरत है कि परिप्रेक्ष्य में प्रशिक्षार्थियों ने अपनी सहमति दी है
6. संगीत शिक्षा के पर्याप्त शिक्षक संस्था में कार्यरत है
7. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद के मानक अनुसार कथन में सम्मिलित समस्त विषयों के शिक्षक, प्रशिक्षको की नियुक्ति संस्था में अनिवार्य है, उपयुक्त कथन से प्राप्त आंकड़ा इसकी पुष्टि करता है कि संस्था में सभी विषयों के प्रशिक्षक है।

सुझाव :—

- 1 नियमित व दूरस्थ दोनों के पुरुष प्रशिक्षार्थियों को अपने प्राचीन आदर्शों, मूल्यों का अध्ययन एवं मनन कर अध्यापन के पेशे को स्वीकार करना चाहिए।
- 2 प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से पुरुष प्रशिक्षार्थियों द्वारा अनुभूत समस्याओं की जानकारी व निवारण हो सकेगा, एवं शिक्षको, प्रशासको द्वारा समुचित कदम उठाये जा सकेंगे।

3. प्रस्तुत अध्ययन शोधार्थियों, शिक्षाविदों एवं शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के संचालकों और प्रशासकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।
4. प्रस्तुत अध्ययन में नियमित व दूरस्थ प्रशिक्षार्थियों के मत दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के विभिन्न आयामों को धीरे धीरे स्वीकार करने की स्थिति में दिखाई दे रहे हैं आगामी वर्षों में यह द्विवर्षीय पाठ्यक्रम सफल शिक्षकों को तैयार करने में सफल होंगे।

संदर्भ :-

Anand, S. (1979) : University without Walls, New Delhi, Vikas Publishing House Pvt. Ltd.

Bahuguna, R.C. (1988) : A Comparative Study of Correspondence and Formal Education, Journal of Educational Planning and Administration, Vol.2 No.3 and 4.

Bhatnagar, S. (1997) Distance Educational : A System Under Stress, (An In-depth Study of Institute of Correspondence Course), New Delhi, Concept Publishing Company.

Dubey, Virendra Kumar (2012) : “दूरस्थ शिक्षा में नवाचार”, Amelioration in Distance Education, UPRTOU Publication, DEC, New Delhi, P 155-157.

Gupta, Dinesh Kumar and Arun Kumar Singh (2012) : “परम्परागत विश्वविद्यालय एवं मुक्त विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहे कला वर्ग के छात्रों का उच्चशिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन”, Amelioration in Distance Education, UPRTOU Publication, DEC, New Delhi, PP. 207-213

Edwards, Allens (1957) Techniques of Attitude Scale Construction, New York, Appleton-Century Crofts, Inc. P.2.

Khan, Moheeta (2017): Implementation of Two Year B.Ed Program: Issue and Concerns. <http://www.researchgate.net/publication/329714694>, Aligarh Muslim University. P.202.

Pandey, S.K. (1980) : “Economics of Correspondence Education in Indian Universities” Meeruti University”, in **Four Decades of Distance Education** in India. Viva Books New Delhi Pvt., P.457.